

कामकाजी महिलाओं एवं भूमिका द्वन्द्व

मुकेश कुमार सैनी*

सार

भारतीय समाज की परम्परागत व्यवस्था में महिलाओं की पारिवारिक भूमिकाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे इन भूमिकाओं के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होकर कार्य करें क्योंकि परम्परागत समाज पुरुष प्रधान रहा है, अतः महिलाओं से आशा की जाती है कि वे पुरुष वर्ग के स्वामित्व को स्वीकार करते हुए पारिवारिक सेवाओं को ही अपना परम् कर्तव्य समझें। परन्तु औद्योगिकरण नगरीकरण व आधुनिक भौतिकवादी विचारधारा के वाद शिक्षा व रोजगार के अवसरों में हुई बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप महिलाएँ भी घर की चार दिवारी से बाहर निकल कर व्यवसायिक क्षेत्र में कार्य करने लगी है जिससे इनकी परिस्थिति व भूमिका में व्यापक बदलाव आया है। इस शोध पत्र में मैंने कॉलेज प्रवक्ताओं की विभिन्न भूमिका तनावों व भूमिका द्वन्द्व का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

शब्द कुंजी : कामकाजी महिलाएँ, सामाजिक प्रस्थिति एवं भूमिका, भूमिका तनाव, भूमिका संघर्ष, सामंजस्य।

प्रस्तावना

एक कामकाजी महिला की अनेक भूमिकाएँ होती हैं वह एक पत्नी, माँ, बहु, वह दफ्तर में एक कार्यकर्ता की भूमिका निभाती है और वह इन सब भूमिकाओं के अतिरिक्त उसे स्वयं का भी ध्यान रखना होता है वह इन भूमिकाओं में किस प्रकार तालमेल बिठाती है।

प्रस्तुत शोधपत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि एक कामकाजी महिला किस प्रकार से अपनी भूमिकाओं में सामंजस्य रखती है वह किस प्रकार से घर व बाहर की दोहरी भूमिका निभाती है। वह एक कामकाजी होने पर भी पारिवारिक सामंजस्य रखती है वह वैवाहिक सामंजस्य किस प्रकार रखती है तथा वह कामकाजी होने पर अपने बच्चों को पर्याप्त समय दे पाती है क्या वह अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाती है।

पारिवारिक एवं व्यावसायिक सामंजस्य

पारिवारिक सामंजस्य का प्रभाव इन कामकाजी महिलाओं के व्यावसायिक सामंजस्य को भी प्रभावित करता है। यदि परिवार में संतुलित सामंजस्य है तो कार्यालय में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होने पर उनका निराकरण सरलता से ढूँढा जा सकता है। इसी प्रकार व्यावसायिक सामंजस्य होने पर ये कामकाजी महिलाएँ बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल अपने व्यवहार को भी परिवर्तित कर लेती हैं। लेकिन वह आवश्यक नहीं कि

* शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

जिन कार्यरत महिलाओं का अपने कार्यालय में अच्छा सामंजस्य है उनका परिवार में भी अच्छा सामंजस्य होगा। यद्यपि परिवार का सामंजस्य कार्यालय के कार्य एवं सम्बन्धों को भी प्रभावित करता है। इसी प्रकार कार्यालय का अधिक कार्यभार होने से, देर से घर पहुँचना, परिवार के सदस्यों की उचित समय पर माँगों की पूर्ति न कर पाना परिवार में असामंजस्य का कारण बन सकती है एवं महिलाओं के मन में मानसिक तनाव, संघर्ष, द्वन्द्व आदि उत्पन्न हो सकते हैं।

अतः पारिवारिक एवं व्यावसायिक सामंजस्य जहाँ परिवार की आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है; वहीं कार्यस्थल की परिस्थितियों विरोधी एवं सहयोगी पर भी निर्भर करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में जब व्यवसाय से संबंधित प्रश्न पूछा गया कि अनुमानतः नौकरी के कारण उन्हें कितने घण्टे घर से बाहर रहना पड़ता है? तो जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें निम्न सारिणी से दर्शाने का प्रयत्न किया है:-

नौकरी के कारण घर से बाहर रहने के घण्टों का विवरण

क्र.सं.	घण्टे	संख्या	प्रतिशत
1.	4-5	24	16
2.	5-6	78	52
3.	6-7	48	32
	योग	150	100

उपर्युक्त तुलनात्मक सारणी से स्पष्ट है कि महिला प्रवक्ताओं के महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में ठहराव का समय प्रायः 5-6 घण्टे थे अर्थात् 52 प्रतिशत महिलाएँ 5-6 घण्टे बाहर एवं 32 प्रतिशत 6-7 घण्टे बाहर व्यतीत करती है जिनमें उनके कार्य के घण्टे एवं आने जाने का समय सम्मिलित है।

प्रवक्ताओं का कार्य क्षेत्र केवल मात्र शिक्षण तक ही सीमित नहीं होता। उन्हें घर पर भी कभी-कभी कार्यालय सम्बन्धि कार्य देखना पड़ता है अर्थात् अगले दिन की कक्षा की पूर्व तैयारी करनी होती है। अतः तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि शैक्षणिक वर्ग की 90 प्रतिशत महिलाओं को अधिकतर घर पर ही अध्ययन करना पड़ता था एवं कभी-कभी विद्यार्थी भी पढ़ने आ जाते थे अथवा कॉपियाँ आदि देखनी होती है।

कामकाजी महिलाओं की भूमिका सामंजस्य सम्बन्धी आधार

- घर व बाहर की दोहरी भूमिका में सामंजस्य
- पारिवारिक सामंजस्य
- वैवाहिक सामंजस्य

एक कामकाजी महिला होने पर उन्हें दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। वह घर व बाहर की दोहरी भूमिका में सामंजस्य के लिए इनसे सम्बन्धित कर्तव्य व जिम्मेदारियों को पूरा करने में ईमानदारी से उनका पालन करती है एक कामकाजी महिला अपनी पत्नी और माँ की भूमिका को अधिक महत्व देती है।

घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ वह अपनी नौकरी सम्बन्धी जिम्मेदारियों को समझती है और उसका पालन भी वह पूर्ण ईमानदारी के साथ करने की कोशिश करती है। इन जिम्मेदारियों को निभाने में वह स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे, पाती और अनेक बीमारियाँ उन्हें घेर लेती है दोहरी भूमिका के सफल निर्वाह के लिए आवश्यक है कि उन्हें इन सब में परिवार का सहयोग प्राप्त हो परिवार के अन्य सदस्य व पति उसकी इन भूमिकाओं को निभाने में सहयोग करे तो वह अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दे सकती है।

अगर वह स्वयं स्वस्थ रहेगी तो वह एक स्वस्थ परिवार का निर्माण करेगी इन सबमें यदि दफ्तर में जहाँ व काम कर रही है वह उनके लिए उचित वातावरण की व्यवस्था की जाये तो उन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी से बचाया जा सकता है।

दोहरी भूमिका के सफल निर्वाह के लिए पारिवारिक सामंजस्य सबसे अधिक आवश्यक है। पारिवारिक सामंजस्य की समस्या प्रत्येक कामकाजी महिला के जीवन में होती है। पारिवारिक सामंजस्य के लिए यह आवश्यक है कि उसे परिवार के लोगों का सहयोग प्राप्त हो जब वह नौकरी पर जाती है तो परिवार के अन्य सदस्यों जैसे सास-ससुर, ननद उनके बच्चों का ध्यान रखे और एक कामकाजी महिला का भी यह कर्तव्य बनता है कि वह उनका कहना माने उन्हें समय दे उनका आदर करें और उनके प्रति जो उनकी जिम्मेदारियाँ हैं, उन्हें निभाये।

पारिवारिक सामंजस्य व नौकरी इस दोहरी भूमिका को निभाने के लिए न केवल दक्षता चाहिए अपितु इन मिली-जुली भूमिका से उत्पन्न परिवर्तनों को मानसिक एवं शारीरिक स्वीकृति भी देनी होगी और इनमें तालमेल भी बिठाना होगा। दोहरी भूमिका अपनाने से उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पारिवारिक सामंजस्य एवं नौकरी के लक्ष्यों की एकसाथ स्वीकृति का कोई अर्थ यद्यपि सभी शिक्षित महिलाओं के लिए न भी हो, तो भी बहुतों के लिए इसका अर्थ संघर्ष हो सकता है। दोनों लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

पारिवारिक सामंजस्य के लिए आवश्यक है कि परिवार के सदस्य पूरा सहयोग करें, आर्थिक परिस्थितियाँ अच्छी हो, बच्चों को पर्याप्त समय दिया जाए, वह परिवार के अन्य कर्तव्यों को भी पूरा किया जाये, दोहरी भूमिका को अच्छी तरह निभाये।

जब यह जानने की कोशिश की गई कि ये उच्च शिक्षित महिला प्रवक्तायें जिन पुरुष प्राचार्यों (प्रबंधन), सहकर्मियों व मंत्रालयिक कर्मचारियों के साथ काम करती हैं। उनकी मनोवृत्ति क्या थी? वे महिलाओं की नौकरी को किस दृष्टि से देखती हैं अर्थात् उनके विचार परम्परागत थे या आधुनिक? इसे निम्न सारिणी से स्पष्ट किया है—

महिलाओं के कार्यरत रहने के प्रति पुरुष वर्ग की मनोवृत्ति

क्र.सं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	उत्साहवर्द्धक	72	48
2.	रूढ़िवादी	15	10
3.	तटस्थ	63	42
	योग	150	100

इस प्रकार रूढ़िवादी मनोवृत्ति का कारण जानने पर ज्ञात हुआ कि ये लोग महिलाओं का व्यवसाय में आना इसलिए पसन्द नहीं करते हैं क्योंकि इनके विचार पूर्वाग्रहों से युक्त पाये गये।

महिलाएँ व्यवसाय में आकर पुरुष वर्ग में बेरोजगारी फैलाने के लिए उत्तरदायी हैं। महिलाएँ केवल मात्र पेंशन एवं अवकाश का समय बिताने के लिए नौकरी करती हैं। कामकाजी महिलाएँ पारिवारिक असामंजस्य के लिए उत्तरदायी हैं। ये महिलाएँ न तो घर ही न कार्यालय में ही निष्ठापूर्वक कार्य करती हैं। महिलाओं को पुरुषों के समान स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए उसका क्षेत्र घर ही है।

इस प्रकार की मनोवृत्ति इसका स्पष्ट कारण यह जान पड़ता है कि व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक प्रगति करना उनके पुरुष सहकर्मियों को सहन नहीं हो पाता है।

दुर्गा किदाओं ने ठीक ही कहा लगता है कि नौकरी करने वाली स्त्रियों की निन्दा इसलिए की जाती है क्योंकि वे सामान्य स्त्रियों की तरह पुरुष की हर बात को वेद वाक्य मानने को तैयार नहीं हैं। इससे पुरुषों की अहम् भावना को ठेस ही नहीं लगती है बल्कि उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि उनका अस्तित्व ही खतरे में है। फलस्वरूप अपनी बौद्धिक एवं शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करने के बजाय पुरुष स्त्रियों की निन्दा करने लगते हैं।

इसी प्रकार यदि महिला अधिकारी हुई और पुरुष अधीनस्थ कर्मचारी हुए और वह अपने कर्मचारियों से अनुशासन बरतने के लिए एवं निष्ठापूर्वक काम करने के लिए कहे तो उसे कोपभाजन बनना पड़ेगा, दूसरी ओर यदि वह नम्रता, शिष्टता से काम लेती हैं तो कहा जाता है कि पुरुषों में अधिक रुचि लेती है। इससे पता चलता है कि पुरुष अभी भी महिला कर्मचारी के अधीन काम करना पसन्द नहीं करते क्योंकि इससे उनकी अहम् भावना को ठेस लगती है।

इस मनोवृत्ति के अनुरूप ही ये कर्मचारी इन महिला कर्मचारियों के साथ सहयोगी, असहयोगी अथवा विद्वेषपूर्ण व्यवहार करते पाये गये। इसे निम्न सारिणी से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

क्र. सं.	विवरण	अत्यधिक सहयोगी	सहयोगी	असहयोगी	सहानुभूतिपूर्ण	तटस्थ	विद्वेषपूर्ण
1.	उच्च अधिकारी / प्राचार्य / मैनेजमेन्ट	16	52	8	5	12	7
2.	सहकर्मी	24	38	4	16	16	2
3.	मंत्रालयिक कर्मचारी	30	42	6	—	18	4

इस प्रकार स्पष्ट है कि सहकर्मी एवं मंत्रालयिकर्मी या तो अत्यधिक सहयोगी थे अथवा पूर्णतया असहयोगी पाये गये। सहयोगी का कारण उनकी सहानुभूति पूर्ण मनोवृत्ति एवं असहयोगी का कारण विद्वेषपूर्ण मनोवृत्ति रही। उच्च अधिकारियों (प्राचार्य / मैनेजमेंट)की भी यही मनोवृत्ति दिखाई दी। इसमें यह पाया गया कि शैक्षणिक वर्ग का संबंध चूँकि अधिकारियों एवं अधीनस्थ कर्मचारियों से कम रहता है उनका मुख्य सम्बन्ध विद्यार्थियों से रहता है; अतएव यह मनोवृत्ति उनके कैरियर एवं प्रगति में विशेष बाधा नहीं डालती।

कामकाजी महिलाओं का संबंध दो समान महत्ता वाले समूह से होता है। वे नौकरी इसलिए करती हैं ताकि परिवार की आर्थिक समृद्धि हो एवं गृहस्थी सुचारु रूप से चल सके। लेकिन व्यावसायिक प्रगति के लिए निष्ठापूर्वक काम करना एवं कार्यालय के नियमों का पालन तथा आगे बढ़ने के लिए प्रयास भी अनिवार्य होते हैं। अतः जब इन महिलाओं से यह प्रश्न पूछा गया कि आप परिवार व्यवसाय या कैरियर में किसे प्रधानता देती हैं, इस बारे में इन महिला प्रवक्ताओं की प्रतिक्रिया इस प्रकार की थी—

माँ, पत्नी एवं कार्यशील महिला: भूमिकाएँ

क्र.सं.	प्रतिक्रियाएँ	संख्या	प्रतिशत
1.	तीनों भूमिकाएँ समान महत्वपूर्ण हैं।	78	52
2.	कार्यशील महिला की भूमिका महत्वपूर्ण है	24	16
3.	पत्नी की भूमिका महत्वपूर्ण है	21	14
4.	माँ की भूमिका महत्वपूर्ण है	27	18.14
	योग	150	100

उपरोक्त सारणी के अनुसार 52 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के मतानुसार एक महिला के रूप में उनके लिए माँ, पत्नी और कार्यशील महिला तीनों ही भूमिकाएँ महत्वपूर्ण व समान हैं। माँ एवं पत्नी की भूमिका विरोधाभास नहीं है। अतः दोनों की एक साथ निभाने में उन्हें कोई परेशानी नहीं है। कार्यशील महिला के रूप में कार्यस्थल के प्रति भी उनकी पूरी जिम्मेदारी है जिसे नकारा नहीं जा सकता। यदि वह कार्यस्थल के कर्तव्यों के प्रति सचेत नहीं रहती है तथा उन्हें अनदेखा करती है तो निश्चय ही अन्यायपूर्ण होगा। अतः उनके लिए माँ, पत्नी एवं कार्यशील महिला तीनों ही भूमिकाएँ समान महत्व की हैं। 16 प्रतिशत महिलाएँ अपने 'कैरियर' को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानती हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी उच्च शिक्षा, योग्यता, क्षमता और अनुभव का उचित उपयोग कार्यस्थल पर ही सम्भव है। रोजगार ने उन्हें आत्मनिर्भरता, समानता, स्वतंत्रता एवं समाज में उच्च स्थान प्रदान किया है अतः कार्यस्थल के कर्तव्य उनके लिए प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण हैं।

14 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ परम्परागत मूल्यों की समर्थक हैं तथा पति को महत्वपूर्ण मानती हैं। उनके मतानुसार सबसे अधिक महत्वपूर्ण पति है अतः उनके जीवन की पूर्णता एक अच्छी पत्नी बनकर पति की सेवा में ही निहित है। 18 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ स्वयं को माँ की भूमिका में महत्वपूर्ण मानती हैं उन्होंने स्पष्ट किया कि पत्नी की भूमिका यद्यपि महत्वपूर्ण है किन्तु बच्चों की देखभाल एवं मार्गदर्शन देना तुलनात्मक रूप से अधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रकार स्पष्ट है कि लगभग आधी महिला प्रवक्तार्यें माँ, पत्नी व कामकाजी महिला तीनों भूमिकाओं को महत्वपूर्ण समझती हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश पुरुष यह मानते हैं कि पत्नी द्वारा नौकरी करने का एक मात्र उद्देश्य परिवार की आमदनी बढ़ाना है। उसे अपना सारा ध्यान परिवार की देखरेख में लगाना चाहिए। नौकरी में होने के बावजूद भी उसे गृह स्वामिनी, माँ पत्नी के रूप में अपनी भूमिका का अधिक महत्व देना चाहिए। मैकाइवर तथा पेज ने बताया है कि पुरुष स्त्रियों को ऐसे अवसर देने से आनाकानी करते हैं जिनकी वजह से स्त्रियाँ ही उनको चुनौती दे सके। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान यह भी पाया गया कि स्त्रियों को घर और कार्यालय का दोहरा दायित्व निभाना पड़ता है। अतः उनकी कार्य-कुशलता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए उनका महत्वपूर्ण पदों पर पहुँच पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है।

पारिवारिक मतभेद एवं कामकाजी महिला का दृष्टिकोण—

सामान्यतः समाज में महिला का स्तर एवं स्थिति पुरुष की तुलना में अत्यन्त निम्न रही है। वर्तमान में महिलाओं ने लम्बे संघर्ष के बाद में अनेक अधिकार प्राप्त कर लिए हैं विशेषकर कामकाजी महिलाएँ क्योंकि आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर निर्भर रही है अतः वे स्थापित शोषण पर आधारित सामाजिक मूल्यों को नकार कर नव मूल्यों की स्थापना करने में सक्षम हैं।

पारिवारिक मतभेद के संदर्भ में कार्यशील महिला दृष्टिकोण

क्र.सं.	दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
1.	समझौतावादी दृष्टिकोण	78	52
2.	स्वयं के पक्ष को मनवाने का दृष्टिकोण	12	8
3.	उदासीनता का परिचय देती है	15	10
4.	पुरुषों के निर्णय को मान लेती हैं	45	30
	योग	150	100

सर्वाधिक 52 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ समझौतावादी दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए परिवार में उत्पन्न तनाव की स्थिति में परिवार के सदस्यों के सम्मुख अपना मत प्रस्तुत कर उन्हें समझाने का प्रयास करती हैं। 8 प्रतिशत कार्यशील उत्तरदात्रियाँ उनके कार्यशीलता को लेकर गर्व करती हैं। अतः पारिवारिक कलह के अवसर पर अपने पद का दबाव डालकर अपने पक्ष को उचित सिद्ध करने का प्रयास करती हैं। 10 प्रतिशत ऐसे अवसरों पर उदासीनता का परिचय देती हैं। किन्तु 30 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार समाज आज भी परम्परागत परम्परावादी मूल्यों पर आधारित है। अतः कलह के अवसर पर यदि महिला अपना पक्ष भी प्रस्तुत करती हैं तो उसका कोई लाभ नहीं है। इस उत्तर वर्ग की महिलाएँ स्वयं के अस्तित्व एवं गरिमा की पुरुष में विलीन कर देती हैं।

इस प्रकार कॉलेज प्रवक्तार्यों में उनकी मनोदशा को लेकर व्यक्तिगत भिन्नताएँ पाते हैं। ये महिलाएँ परिवार एवं बच्चे को प्राथमिकता देकर ही व्यावसायिक आकांक्षाएँ रखती हैं एवं इन आकांक्षाओं को संघर्ष की स्थिति में आने से पूर्व ही दमन कर सामंजस्य करने की चेष्टा करती हैं। ये समयानुकूल आकांक्षाएँ ही परिवार को विघटन की स्थिति से बचाती हैं एवं कभी-कभी उठने वाली संवेगात्मक आकांक्षाएँ तनाव व भूमिका द्वन्द्व तक ही सीमित रह जाती हैं। अतः ये अपनी स्थिति साधारणतया मध्यस्थ मानती हैं जो असंतुष्ट एवं पूर्ण संतुष्ट दोनों स्थितियों के बीच की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मैकाइवर, आर.एम. एण्ड पेज, सी.एच., सोसाइटी, नई दिल्ली: मैकमिलन., 1985
2. वोहरा आशारानी: भारतीय नारी: अस्मिता और अधिकार, प्रथम संस्करण, 1986
3. आहूजा, राम : रिसर्च मैथड्स, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001
4. कपूर, प्रमिला: मैरिज एण्ड वर्किंग वूमन इन इण्डिया, विकास पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1970
5. देसाई नीरा: भारतीय समाज में नारी, मेकमिलन इण्डिया, दिल्ली, 1982
6. सिंह, वी.एन. : आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010
7. आहूजा, राम : राइट्स ऑफ वूमन, ए फेमिनिस्ट प्रस्पेक्टिव, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 1998
8. मोदी, ईश्वर : जेन्डर आइडेन्टीटीज एण्ड मल्टीपल मार्जिनलटीज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2012
9. दवे, दीपिका : 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2014
1. कुमार, राधा : स्त्री संघर्ष का इतिहास 1800—1990 ई. नई दिल्ली, 2002

